ISSN 0976-8017

॥ ओ३म् ॥

गुरुकुल पत्रिका

(प्राच्य विद्याओं की शोध प्रत्रिका)

संयुक्तांक

वर्ष 65/3-4 अंक

जुलाई 2013 से सितम्बर 2013

अक्टूबर 2013 से दिसम्बर 2013

प्रधान सम्पादक

डॉ. सोमदेव शतांशु

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

तथा प्राच्य-विद्या संकाय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार-249404

Scanned with CamScanner

विश्वजीत विद्यालङ्कार 88–93

श्रीमद्भगवद्गीता के आलोक में मानव–मूल्य
डॉ.संजय कुमार 94–105

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण–चिन्तन
संदीप कुमार उपाध्याय 106–109

Ashram System - A sociological Review
Dr. Akhilesh Kumar Shukla 110–115

भारतीय दर्शन में कार्यकारण सिद्धान्त का विवेचन
डॉ. सोमवीर 116–124

वेदान्त दर्शन में बन्धन एवं मोक्ष का स्वरूप
सुशील कुमारी 125–129

वैदिक जीवन दर्शन की वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता
पवन कुमार 130–133

न्याय–वैशेषिक में जातितत्त्व चिन्तन
डॉ. शशिबाला 134–138

भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार और उसका भारतीय....
डॉ. शशि प्रभा 139–148

दक्षिण–पूर्वी एशियायी देश– चम्पा एवं कम्बुज....
डॉ गोपाल लाल मीणा 149–154

संस्कृत साहित्य एवं गुरबाणी में ब्रह्म का स्वरूप
डॉ0 अमिता रेढू 155–157

सामाजिक सन्दर्भ में वैदिक मूल्यों की अवधारणा
वन्दना रावल 158–165

प्रो0 रामजी उपाध्याय के दृष्टि में शम्बूक
डॉ.संजय कुमार 166–172

वेदेषु प्राकृतिकचिकित्सा
डॉ. सुखदा सोलंकी 173–176

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के गद्य में जीवन–संदेश

Scanned with CamScanner

प्रो0 रामजी उपाध्याय के दृष्टि में शम्बूक

डॉ.संजय कुमार
संस्कृत–विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर,म.प्र.

आधुनिक संस्कृत नाट्य परम्परा में प्रो. रामजी उपाध्याय एक श्रेष्ठ नाटककार के रूप में साहित्य पटल पर पदासीन हैं। उनके जो भी नाटक हैं वे सभी नाट्य महनीयता से समवेत हैं। वे सदैव परिवर्तन के साथ नाट्य विधाओं को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। चाहे अजीगर्त ब्राह्मण हो या शम्बूक, दोनों के चरित्र को परिमार्जित कर पतित से पावन बनाने की चेष्टा उन्होंने की है। यह साहित्य की कोई नई परम्परा नहीं बल्कि कालिदास और भवभूति सदृश उनका भी कवि प्रजापति होने के प्रमाण स्वरूप ही है। जैसे कालिदास शकुन्तला के प्रत्याख्यान के बाद उसे मारीच आश्रम में भेजकर उसके जीवन में चर्मोत्कर्ष ला देते हैं, वैसे ही भवभूति गर्भांक योजना में श्रीराम और सीता का पुनः मिलन कराकर सहृदयों को आनन्द विभोर कर देते हैं। कवि राम जी उपाध्याय उसी विभूतियों में से एक हैं। वे भी शम्बूक के वध की घटना को अभिषेक रूप में परिवर्तित कर शम्बूकाभिषेकम् नाटक में चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं–

"अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।।"[1]

काव्य संसार का कवि प्रजापति माना जाता है। वह जैसा चाहे अपनी इच्छानुसार काव्यलोक की सृष्टि कर सकता है। उपाध्याय जी ने शम्बूक के व्यक्तित्व को नवीनता के साथ ग्रहण किया है। उन्होंने शम्बूक को सदाचारी, गुरुभक्त, सत्संगी का व्यक्तित्व प्रदान किया है। शम्बूक अपने पिता हिरण्यकेश की अनभिज्ञता में ऋषियों के सानिध्य में रहता है। वह आश्रम की मर्यादा के अनुरूप आचरण करता है। उसके मन में ईश्वर के प्रति अपार आस्था है। वह संसार की नश्वरता से अवगत है। उसके आचरण से प्रभावित सभी ऋषिगण उस पर स्नेह की वर्षा करते हैं। उसके मन में सम्भवतः भट्टनारायण की वही उक्ति थी जिसका अनुयायी कर्ण था–

"सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्।।"[2]

अर्थात् मैं सूत हूँ अथवा सारथी का पुत्र हूँ जो भी कोई मैं हूँ। किसी भी कुल में

Scanned with CamScanner